

धर्मरत्न वज्रानां सुरत श्री महाविहार
म-५

रुप्रीतिनिर्वाहका जटाश्रुतापनि क्रियता ॥ इति पदं यथा श्रुत्वा ॥ इति रुतवलिना यनि ॥
समायातः ॥ स्तुत्यमानः ॥ सदाशिवः ॥ ॥ प्राक उवाच ॥ नमः ॥ शिवाय ॥ नाकाय ॥ पुनः ॥
स्मना लिङ्गश्रुतीमहादवत्तां नता स्तिजगत्पता ॥ रुतवासाय दवाय ॥ रुतानां पतय नमः ॥
नमः मुख्यं रुतानन्दरुतवः ॥ ममाय रुत रुतानां ॥ नागनादि रुतानि ॥ सदा ॥
प्रमत्तं नमं गय ॥ नाका रुतवत्ता रुतं ॥ सामना ॥ अरुव रुतानां ॥ शिवां सदा वरुत ॥
म्वना ॥ शिवां नोदी रुयाञ्च व ॥ रुतं रुतं रुतं रुतं ॥ ना नि सदा लिङ्गानि ॥ रुतनाय ॥
प्रार्थनं व सदा ॥ रुतानां ना रुतं गय ॥ रुतनां सदा व ॥ सदा मपि रुतं ॥
रुतानां रुतं ॥ प्रमत्तं रुतनां ॥ मोलि रुतं रुतं रुतं ॥ रुतं रुतं रुतं रुतं ॥ रुतं रुतं रुतं रुतं ॥
नि ॥ शिवां सदा व रुतं ॥ एक पदं नमः ॥ प्ररुतं रुतं रुतं रुतं ॥ विधु रुतं रुतं रुतं रुतं ॥
सुखननां गमः ॥ प्रमत्तं रुतनां रुतं रुतं ॥ नीलका रुतं रुतं रुतं रुतं ॥ रुतं रुतं रुतं रुतं ॥

[illegible]

मूलं वमहाधार्मं सर्वं नरुयावहं। न प्रक्षाना विनै सर्वं वरु वपनमाहुतं॥ नन ४४५
४४५ द्वा वरु वरु द्वादि ४४५ द्वा॥ नना निमिषमाहुतं सप्रक्षाना सगारुवत॥ तीव्रता मप्रक्षाना
नाहता नय गहु वि। रिद्यमाना रुथा कवि, विदिक्षाना यनाउ। ४४५ रुग्ने रुग्ने निग्रहि
नावे ४४५ कली कता ४४५ कून प्रहा निगा ४४५ कवि, नू इ ले ४४५ पिथा पिता॥ रुग्ने निग्रहि
देयदान वनारु सा ४४५ उव रुग्ने दानवा ४४५ सैन्य द्वा द्वा गऊ माना ४४५ सप्तका ४४५ नखा
गुधा भक्ष, युनिग ४४५ रुग्ने गय। दवान्यु ति कता मभा, दानवा रु मदावत ४४५ वलि ४४५ परु नय
संक्षम ४४५ किता ४४५ पुन ४४५ विमा ४४५ रुग्ने संका ४४५ न। ४४५ रुग्ने सप्तम निगा ४४५ दैन्दय द्वा उहु
वाना दानवे सरु॥ वलिना दानव रुह, मरु द्वा यय, धनदा। तथा यभा मदावारु, नैम ४४५ स
प्राग॥ नेम ४४५ प्रद्यपे नैव, यासी क रु न संगत ४४५ निरु रु नेद प्र मरु, यद्वै वक्र सदा गति ४४५
कनक वन ४४५, यद्वै वक्र नद हुत॥ नारु रु दान माया न ४४५ क रु ४४५ व स धूम वाता केवल

वकरुं वा दूददाश्च कथं वन॥ न न नापि च रुक्म न वेपि तापि कथं च॥ मे वी वृद्धि मगा क
न्याययपिविवरुं त॥ न विष्व स पृच विना धिना क विमती विरि॥ सार्थ प ने चि च रु (१४) वि
सययश्चरवा द॥ १४ पूनमर्तुं विक रं रुयत क ल द॥ १५ सूवसु दना धषा या द क मा य वा सि
धरुं च १६ पता के च न ह र मिमल मय यत॥ वाम ने च दि १७ स वा ता पि न च न रा स र्ता॥ तथा स
ना सु द द्या न प्र मि स म सु का १८ पा स्वा म न म हा रा गा वा द न न रु दं मि ता १९ ग हा न रु द म द रु
या मि प्र ता य वा न॥ सू य १५ अ १६ गु वा न रु द, मृ ग न रु द ल गी तथा । य मा म हि ष मा न रु द न
प्र ग वा रु न॥ वृ षा न रु द रु थ या गी, मृ ग न रु द १७ स दा ग ति १८ क र न १९ पू ष्य का न रु द वृ षा न
लि वा रु थ । तथा वि मा न स य का १८ स च द वा रु व ना वि ना १९ च गु वा म न स वी ता १९ (१५) रि
ज य लि या । प्र ल म्य वि रु स च र्ण रु द्या र्ज य का रि त १९ ॥ न वि रु ना क न रु द गा न रु स ना न
नू षा ॥ नू स ना दि म हा का या, ली मा का ली म वि रु मा १९ ॥ न र्मा धा न रु र्ण द वा नां दान वे स

महिषाश्रुतथापरे ॥ अथातो वसमाह उः दिवान् केचि नथापरे ॥ सिंहस्तथापरे रुडाः शार्ङ्गान् नृपालभास्तथा गृध्रान्

इति श्रीस्कन्दपुराणे केदारखण्डे शैवगात्रे श्रुतपरिवेष्टनमोहिनीश्रवता रक्तयने देव
दनप्रकनसदादत्ताय ॥ ४॥ ॥ लामगउवाच ॥ मदातगर्जमानास्तु, त्वाक्रियन्तु
वनं ॥ जगताद्यसुनासंख्या, मदावतापनाक्रमां ॥ विमानमात्रकमदामहात्मा, वेवाचनि
वलीनसाक्षं ॥ दैत्यैः समता विविधैर्महावली ॥ सुनान्यद्वडावमहा रुयावरु ॥ स्त्रानिभूया
उक्तं ॥ समय उ ॥ मरुप्रण ॥ कविद्याद्यान्समानूरा, कुरुगमगयावास्तथा ॥ मयूनाना
कैमेनाश्वतथापना ॥ कविद्यान्निवात्रुडा उक्ता नस्वतनानपि ॥ गजावनान्येनैव
श्वतथापना ॥ वदान्यावरुवादेत्या ॥ खड्गगच्छिपातग ॥ यविद्या ॥ यद्विज्ञांयाग, शून
याद्यय ॥ नृसिनामाचिना ॥ कविन्, उहुहु ॥ यविद्यायूथां ॥ रुयानागनथा ॥ अन्य, समानूरा
लापित ॥ विमानानिसमानूरा, वलिमुख्या मरुप्रण ॥ स्पष्टमानास्तुता न्यायं, गर्जनं यम
मूर्ध्नि ॥ वृषपवाउवाच ॥ वलिर्नंदत्ययं गवी, त्वया कुरु मदावाहा, ॥ उक्तं मरुसंगमी, विष्वा

प्रकथितो, विष्णु नमि तत्तु ४॥ गदा तस्मिन्निर्गन्, नारु दविग्रु स्यव ॥ निवा गगनग
कवन्धमही तत्ता ॥ उममा एरु दार्क डि, चूर्क यामा सव नदा ॥ ससा डि ४ सव रू लो क, चूर्क
न्य तदा रु वत ॥ तथा नन क वा न्वन, चूर्क कृ न व ना च न ॥ दृक्ता तदा मला दवी, तस्या द नि स स
ता ॥ निवास ४ सव दवा ना, तस्या ४ पद त लो रु वत ॥ पी ० तस्य समी पर्थ, निवास ४ ति ना म रु
रु ना माल यय स्या, दद्या रु च न धा मूर्जी ॥ मला ल्क व ४ ति स्या ता, रु ग रु य वि भा हि नी ॥ क रु
म तृ था शो, ला का ॥ विल य ग त ४ ॥ सु धां स मर्थ च द्या य, ति ला क्ष न ग ता रु वत ॥ वा स्र थ वा
नि, रु ग नां का न ल य न ॥ विष्णु ४ प्र सा वा न जा त, सु ना लं का न्य सि धि दी ॥ न सु ना लं चि ना ॥ ४
न द वे वि य र्थ या त ॥ वि ना दे व न ना नी ध्व, उ य म न नि न र्थ क ४ ॥ यु ग प थ न य स च, क्री ना ध्व म
कृ त ॥ सि धि क्री ता दि द वा ना, म सु ना ल म सि द्ध ता ॥ त न न्य न द व व ना ४ प्र का पि ता द स्या ॥
प्र वि ना दि नां पू न ४ ॥ न न क ॥ ला सु यु ना न दा रु वत, विष्णु न त ग रु मा ना रु दानी ॥

यं वदय ना, सर्वं वदय ना यत् ॥ ४ ॥ वव किं च तौ निरु नेव का दो य मा द दाम्य र्द ॥ नृ मृ त हि म द्वा र
 लि मूर्त्त्या व द न्दु र्ता ॥ वलि ना का ग द्वा य वी, य रु म न मि या स्य मि। स्वा मि नी त्व न स य द रु, नृ स्मा
 न स्य च ॥ ए व स मा नि ता न न, वलि ना रा वि ना स्म ना ॥ य नि व भे द का श्चो र्थ, क य र्ण गृ ह्य स त्व न
 न व न्दु क न ता नृ त स नि र म्भ, (अ) ती त टाल सु ग मि र्म द वि द्वा तां गी। सा वृ ण टी व ल नृ य
 न न, कृ ण्ण रु नी क ल ग पा ति न था वि व र्ण। त थ दु द वी य नि व भ य नी, स मा हि नी य व ग द
 ता। व व भे द व नृ सु धा न स य नृ ४ सु धा रा स न मा मृ त य था ॥ य न न्ध न द व ग द ४ सु धा स र्व
 पा य न या वि भ्व मृ र्त्त्या ॥ द व न्दु मृ र्त्त्या ४ स रु ला क पा ला, रु धा द त्या नृ स न स्का रु दानी। उ क
 व लि मृ र्त्त्या दि रु द्वा, म न स्वि न्धा धा न य ना व रु वृ ४। न न ४ रु धा वि धा नृ नै द्वा, द र्ता स्का भा रु
 गो। न दाना रु ण्य क रु ण्य, द्वा व नो द स्य य नृ ग वी। द वाना नृ य मा स्का य, कृ मृ ता र्थ त्व ना चि नो
 वि श्वो न दाय र्का, द वाना म मृ ता र्थि नो। य द मृ तं पा उ का भा, ना रु ४ य न म दू ण य ४। च द्वा क

धा, गृहीर्नकलङ्कदा ॥ १ ॥ रुयापनयायुका, साक्षात्सविश्वमाहिनी ॥ कनकनगदा ॥ १ ॥ कल
नविनामिगा ॥ २ ॥ रुयपनयाकाया, रुगन्मगलममला ॥ पवित्रलधनासच, सुनामिका ॥ सुनामि
लागगास्तुल्लक्षयव, यरुगम्कसुनारुमा ॥ १ ॥ गान्दद्वाभाहिनीसय, उवाचप्रसदाकमा ॥ ॥ भा
न्युवाच ॥ १ ॥ गम्कमिथया ॥ रुया, धम्मसचसमाधक ॥ यथा ॥ कथयथागका, यदिगल्यववामम ॥
हिरवगाश्चय, कनूधर्माविल्वित ॥ पनयामयकापय, यकृच्चकिस्वगाकिग ॥ धन्यास्तु
रुया ॥ १ ॥ यविगलाकायालका ॥ कवलाभा ॥ रुयार्थहि, उद्यार्गयप्रकृच्चन ॥ गङ्गासागिना ॥
प्रकाश्याविवाचन ॥ गम्मादिराजनकार्य, समुत्तमयचसुवता ॥ १ ॥ दवययप्रयकृच्च, यदिग
याप्रिय ॥ १ ॥ लुकावचनयद्या, तथाचकनगदिता ॥ लाकयामा ॥ सुनोसचोत्त, दवानसर्वासवा
यविजास्तु ॥ १ ॥ सुवजसुगार्थकृत्तादिता ॥ १ ॥ गम्पविहमानमृक्कवाचपनमवव ॥ १ ॥ भाहिनीस
कासुनालास्तननिव ॥ ॥ भाहि न्युवाच ॥ लादावत्यागतायुका, ॥ गिर्वेदिकी ॥ १ ॥ त

नागिका विद्या ॥ मया सप्तमय गदा रुव नानि कृणानि वै ॥ मना क्वा निर्मला हानि सु प्र
 दा निवा नमूपा विविष्टु ॥ सर्व सिद्धौ सु मल कृणां ॥ स्थापयित्वा सप्तमल द्वा पूर्व क
 यत ॥ नागो जाग नर स सर्व ॥ कृणयं नमया मृदा ॥ यथा यथा प्रतीता या प्रातः स्नान मृ
 वत् ॥ नमना वलि मर्या ॥ यथा किं रुत्वा यथा क्रम ॥ सर्व मा वग्य कृत्वा गदा पाना नम
 ना वलि ॥ यथा वृष पचा नम वि ॥ नख वृद्ध ॥ सुद्धा वैव सुद्धा दि ॥ काल नमी विशा
 नापी लिखित ॥ कृष्ण निरुक्त प्रय सिद्धा ॥ तथा स क्वा यथा यथा निष्ठु ॥ सुद्धा
 मदि आ मा रुष्ठा कृष्ण विजाला कृष्ण गा पवाना ॥ विरु नास्था मला वा रु कृष्ण नमुद्धा
 विवा रुचा रुका धा ना ॥ धा नास्था धा न रुष्ण न ॥ नगवा यथा वरु वा ॥ यथा नवना कृष्ण ॥ ॥
 मवा पविष्ठा ना रु कृष्ण ॥ यथा ववा ॥ तथा यथा नका टी ना ॥ संख्या ना पकि ना स्ति ना ॥ कृष्ण ना
 या दद्या कृष्ण ना ॥ विज्ञा कृष्ण ॥ यथा यथा कृष्ण ॥ यथा दद्या कृष्ण मरु न ॥ सर्व विज्ञापित

जगत्प्राप्तितावचारिंश्च नानानूनयका विदे ॥ मनु ४ संकुर्वता दवा ज्ञानयामि सुधा मिमां ॥ अ
 या प्रहा वन भादु यित्वा थ दानवान् ॥ एवमाता वरुणवान् मूक न नाथ संग्रय ॥ स्का य पि
 अचान् नृव मधु सूदन ॥ भादिनी नृय मा स्का य दद्याना मयु गारु वता ॥ नाव दद्यात् स
 यनस्य नमथ व्रीता विवाद ॥ सर्व दद्यानां ममृता ॥ यत दारु वता ॥ एवमुवर्तमानं नृमा
 नृय मा स्कि ना ॥ इक्ष्वा या आन दा दद्या ॥ सर्व रु नमना नमा ॥ विस्मय नममा विद्या वरु वृ
 कर्मा ॥ ॥ वलि नृवाच ॥ सुधा त्वया विरु क्त्वा सच आसा निरु तवा नीयु त्वनमदासा ॥
 धववनममा ॥ एवमुक्त्वा प्रवाच द् समयमाना वलि पुता ॥ श्रीक्षानेन विस्वास ॥ कर्कशा दिवि य
 ॥ नृमुर्ग साहस माया मुखे त्वमिति साहसा ॥ नृगेव त्वं निदय त्वं श्रीक्षया ॥ स्वरावगा ॥ निस्तरु
 विरुय धूरु त्वं नव नत्व ग ॥ श्रीक्ष सा च व विरु या क्षामा नास्य तु र्गय ॥ यथा वखा यदनाथ ॥ दृ
 दि सा य नाय ॥ काका यथा उ जानाथ ॥ धाय दानां वजं वृका ॥ धूरु तथामनूयानां श्रीक्ष या स

मम नृक्ष, सना सन गत यून ४॥ उदधमथ्रमानात्र निग्नत ४ समरुयग ॥ यन्नन निनि निरुता
यूनामृ लंरुय ४ यून ४॥ यातिर्यायूक कलर्ग, सधयाय निगृक वै। यावत्त च सना सवे, नि
नमना रुर्ग ॥ गावदेयाः समागत्य धर्म कामावलादिवा न्न सनाय नत ४ सध्व, रुगर्ग नतिरीय
कलर्ग सधयायूक, गृहीत्वा न समुत्त का ४ देया या तात मा रुग्मू, रुदादवा ४ ग्रमा निग
नृगमू खिन्न मखा, गरुयन ४ पन सय नी। यृष्ठ ना नृग ना नृद्धा, दवान् समन मत्त का ॥ वरि
४ स संलज्जा, याद्रु कामावुवन्नव ४॥ ॥ वलि नृवाच ॥ यूर्य सध्व क्क नाथ ॥ यज्ञा ना ॥ यय नि
वय नृक वला नृवा ४ सधया य नि ना नि ना ४ ॥ श्री ह्य भव प्रग नृर्वा, रुव हि ग्य सना रु मो ॥ नि
यं मूदायूक ४ किम स्मा रि ४ प्रथा रुन। यून स्मा रि ४ रुर्ग यन्न, सख्य स्वार्थ यने ४ स रु। नृधना
नृरु नृ, ना रु का या विवा न ४ ४ ॥ ५॥ ॥ निरु ति ना रु न, वलि ना मून स रु मा ४ ॥ यथा ना न मा
नृस मूपव रु मू ४ ॥ निरु ति सानिय न व कि नृ स रु ध ना री ॥ विगं प्रेता ॥ न इ द्वा विरु ना स व सृ ना रु न्न म ना

सं. ममन्कुः श्रीनसारानी। वकीरु रात्रले व. मतिमा र्णवलात्कटः॥ शृङ्गं क. ॥ नजा लाव
ममहात्मनः॥ तथा सोपवन्तः॥ ॥ नसा नमश्च दृष्टः॥ उरुमाद्य जलदव. वठव. मिः॥
क्तिः॥ हालादलं वसंतात. गैदृष्ट. नो. नदनहि॥ नतादवा नूवाचद. दव विप्रमि नय।
कार्यमन्कनं चाञ्च. कवहि नय. नयः॥ निवधा. थि यतादवाः सचापदवनागनं.
मङ्गलानां च दव यलु मतिविदुः॥ कवि सृ. न स. सचः॥ यूनारु दमहात्मनः॥ दकस्य
गानं. वीनरुद नयत्क. नः॥ गसा चि. वं नय. प्रया नुदवाः यनात्य नाताम पिअः॥ य. न
नात्य नय नमानन्द नृयथा. मि. म. य. य. प्रय. व. क. नृयी. नदव सद्या ह्विनादव अः॥ माः॥
धकाः॥ नृ. हि लाय यनाः सच. न. नृ. स. नि. व. व. म. दा॥ ना नदस्य मखाही न. ॥ श्री विना
॥ अमृताः॥ यापि नाक. स. द्वा. द. क. नि. ना. नृ. ॥ क. व. ली. प. द. ग. व. द. शि. ॥ नि. य. म. न.
न॥ नना गद्व. य. स. द्या. ना. स. च. नि. व. य. ना. म. खा. क. व. ली. य. म. सी. वी. ना. नमन्कुः॥

वत्त॥ यन्निवादनता॥ कविं क्रेतव्यमागता॥ उर्वरुत्तमायागा॥ कसनामन
 नायनमपिषाथ॥ उद्धृष्टमपिषाथ॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 मिदसर्वं॥ जगमागमस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 जगमागमस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 नदो॥ नत्थात्तामस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 वस्तुनगस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 नस्तुमवस्था॥ कस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 गतस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 नस्तुदा॥ जिला॥ नादित॥ नस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा
 नाविष्ठा॥ माधनामस्तुविष्ठा॥ नकनकमस्तुविष्ठा॥ ननस्तमस्तुविष्ठा
 दि

[illegible]

कस्मात्कालाशयमय नशः श्रीधनश्च वजाताय नान्यथा समस्तानि तानादवेऽयं विवृता न
अदः ४ स्रुः ॥ नानागमेऽयं विवृता कालकूटश्याययो ॥ ततः ४ अत्रिनाचितादवा ॥ ४ ॥ न
मनः ॥ न विद्या गाल सवीनाः ४ कथा ॥ ४ ॥ न स थ कि ४ ॥ वक्रात्त वयुन स्रुय गतादवा ॥ न
४ वेकू ४ मावुन न च कालकूटश्यादिता ॥ वक्रादथा अभिगता ४ न काय न विद
नृषं प्ररु विष्म मी ॥ वेकू ४ मागु न म ॥ धा क म माधव न स च स न स न गता ४ न न री ॥
वैकाल न स म स्रु कालकूट स म स्रु गता ॥ द ग्ध थ वक्रात्त लाकं वेकू ४ वददा रुवा काल
नादग्ध विष्म ४ स च गु ला न य ४ या अदः ४ स हि न ४ स य स्रु माल स्रु ह न स्रु वि ४ ॥ वेकू ४ व
य स च लाक ४ स मावु न ४ ॥ कल काल व सवीना ४ स च लाका स्रु दारु व न ॥ न स्रु द व स्रु सवी
लु वक्रात्त स्रु स्रु मी स्रु गन्ध का नागु कल काल स्रु मडु न ॥ ना स्रु मि न कल वा नि न वायु न स्रु स
ह का ना न व म स्रु नृ ल विद्या स्रु थ व वा नि व स्रु का यात्त मा न स्रु मी स्रु न स्रु गल द्या ॥

[illegible]

मस्यार्थितस्तुनापिनाकी वृमरुधुज। विद्याश्चकारं ह्यर्थं गताधियनिनागदा॥ लिङ्गचूपीवर्वाच
चिकात्रा निनामयशा निनश्च नाद्यामकशा कयदीनीतलादि नशा ॥ श्रीमद्वच
वा रुचम्वष्टमवाक्यं प्रदयायनयाश्रुगशा नरुका नासकं सर्वं जगद नञ्च नाचन। सि
क्तनासदं कानः प्रतयायादि नवच। विदिमाचं गतापनकवर्तुः किमर्थं नशाया विनहिता
देतपनसिदाः किमागुप्तमयकुसुमानन्दककान्तं ॥ श्रीगतापनिनूवायायादि सर्वं केवल
पनमानन्दतुल्यं नशा नसा हृदयपनं किञ्चिन्नान्यदसि पनकपानाना नृपकथं ज्ञानं सूनासूनावित्त
विदिगं माहुरननीतिरिदेवैश्वलादिगं ॥ हतायामेव उर्विग्य नाना रुदसमन्विताः ॥ ज्ञानं सांसा नय
निर्यानिर्यावित्तकलापनस्यनविनाधनज्ञानमादेनमाहीनाः ॥ कर्मवादयताः कविः कविस्तुल्यम
गाः ॥ ज्ञाननिकाशयकचित्प्रसन्नमविभादिनः ॥ एवमं गयमापनं प्रादिमावृषरुधुज। न
गतायकगुप्ताः कवायवृषरुधुज। हृदयमतायकगुप्ताः कवायवृषरुधुज। एतवान्य

रुवः कृताङ्गागान्धक उवः कृताङ्गाः सच्चमदाङ्गाः सात्विकात्राङ्गाः साधमी। पु^{दस्य}थैकं रुगवापुनरु
 णवकृमुद्यतः॥ श्रीमहादेव उवाच॥ कालेन कृत्वा चर्गयागा, नरुः सत्त्वगमासिच। नयावृत्तं
 र्व, सधवा सनमानुषा। यनिदृष्टमानमनउ नव्यनयनमार्थतः विद्युतस्तत्त्वमिथ्यव, कर्ककत्वा
 ध्वनी। यावद्दलणसंयुक्ता, साधमानः सदागिवः। यादृक् गागदालिवाता। विध्वनूयाङ्गागथा निः
 कात्रलपिपी। लिङ्गनूयी सरुगवान् निमग्नरुक्कसादरुग॥ एकास्ति निः यनाङ्गी, वद
 सलरुक्कसागा। साविहया विदुः, कवलाकननत्यन॥ ॥ मय उवाच॥ प्रकृत्यनग्न
 गदगञ्जनावर्ण॥ गा। सा। स्ययुथकगत्वं, कथंजानेनद्वयमा॥ ॥ लाम उवाच॥ साका
 संरुगा, गा। सा। रुगवान् रुवः॥ यथा नूयः निवः साका, रुदयादिगा। सध्वनः॥ निवनसक
 मः कृगकनमदात्मना। नूकात्वा प्रकृतिरुत्वा, वरुकात्तनिनकनी॥ तस्य दृक्काकृगयत्वं, गज
 स्यनकदा॥ प्रिष्टुलानादनच सुः सगर्जनमयागयत॥ तदा मुनामहादेवः यनङ्कायनकय

लकि मूवायदवनवनयः ॥ गतावृता मूवायदवा वनयवनममदि । आर्यरुगात्रयादव मम
नमं गय ॥ त्वानगाना लयमं मूठ ॥ प्रकृति मम मूठ व ॥ तस्मात्तु जीवयत्त्व मम तुच्छं मव
स्यरुगवाचुडी मयायुग मजीवयत्ता । सिद्धं नवद ननेव मखत्वात्समथा कथयत्ता ॥ गदागजा नना
प्रसादाच्च कनस्यव ॥ मायायुग पिनिमया क्लानवान्मव वरु ॥ ज्ञात्मा क्लानाद ननेव निव
नामय ॥ समाधिर्मस्तिगा नूड कालव्याता नूड कारवत्ता ॥ आगदधु मत्वाय स्वकीयं दृष्टं न
कन मूठ गदाय ॥ गदाय वक्रानिव रूत ॥ मदि सिद्धि दय ननेव कन गदा विना किन ॥ तना गदा
व्यायथ वान्ययधिकारुवि ॥ नमा मपिय मिक्ता ग ॥ कना वोगा मूठ ना गदा ॥ तस्माद्विलाच नाक्ता
तिविश्वप्रापिणी ॥ यथ कृत्स्नि ता पुन कृत्स्नि लिङ्ग प्रकृति न वच ॥ ददनी विमलं तिर्ग प्रकृति स्तं
त ॥ ज्ञात्मानं वगा ॥ सा ॥ तथैव गुरुय ॥ लीनं तिर्ग मम मूठ वरु न चो क्लानवा न पि ॥ मय
पून ॥ मूठ प्रतिन वं प्रयत्न ग ॥ नमा मिनि नमा गदाया मीक्षया मगा दधन ॥ तदा ददनी न व

सदानकानक॥ वक्रात् अत्र इन्द्र विष्णुः क्व सदा गिवं॥ ददनप्रमत्तानिर्तिगगकाप्ररानिच॥ द
 दुरगात्तकानाक्क काट्य४ प्रनमा एवत्त॥ तीयनकवेविलियनसह (॥ तीगत्रयोदि॥ प्रकृत्यनकजित
 तिगास्यानगतवसा॥ गकातिगअसुव नैह (॥ अगनचद अग॥ तीदान॥ किर्तचुनाप्रनसुनमव
 निवास्यासिर्तलोकं ऊगादे नञ्चवाचनं गार (॥ एवपितदृका संनपनचगथावदम्॥ तदा वाचमह
 गलध्रुकाग। त४ सह॥ सग। किर्तकृ यमान, सुखाचयनयानदा॥ ॥ श्रीग। एव
 च॥ नमामिदवगवनदप्रसन्नं गका। त्वितंका न नृपयसा न। कानात्यनयनधा। तिन्न
 यात्यनयनमंगलवृषी॥ गलात्यनयनमंगल अजानदारुणयनमनिर्विवाद। धमात्यनगनाध
 वयगिलासना॥ प्रकृत्यनकजितहृदि तत्रोहा नचक्रमाप्रकृत्यनकजितहृदिमायाप्रकृतिगीयत॥
 धर्त्वरुगवा, त्वमाययासुअस्य। थलं यानयेदिविर्वी। अस्माद्गनास्वमिदप्रनक्ष, सप्रक्ष
 न्दसुनचवाचनं॥ यथायूनासीतिगवान्महत्त, तैलायना। थमिचवाचनात्मा। कृत्रुष्यशीय

जीवकाशी चयात्रना नैसकलं प्रदहो ग्ध ॥ उर्वमुतामरुतायवा गाता। नमरुतात्मना। नम
गतारुथा। नमवा नमरुतावन ॥ यदृत्तिर्नैकालकूटं लाकर्मरुतालका। लिंगप्रयत्नान
मर्लनाकना रुदा ॥ सदवा प्रनमत्वा न्ये सच्चिवजगन्निवा नतत्माद्रुता न्यव कययापन
न ॥ वक्राविष्णु स्रजडा न्ये लाकपालामरुताय यद्रुविद्याधना ॥ सिद्धा गन्धर्वा नमराग
ना। न्येव नसच्च निर्वोयविगता ॥ वा। विस्मयनसमाविष्टा बहवृक्षा तसाधसा ॥ सच्चदव
न्येव उचनान्यम्येवनेमा ॥ कालकूटनमरुता सच्चर्विद्रावितावर्य। मृतप्राया रुता ॥ स
कालाकपाक्षमी ॥ ० ह्यववस्तुदादेत्या रुक्षी रुता रुदास्तिता ॥ इकादयाला कपाला विष्णु
नध्वनी ॥ वक्रादीवयनरुह्य रुदमच ॥ समविता ॥ कनर्दका निर्नैविष्ठा नविन्दाभाल्य मधा
नदाप्रदमरुतावन नमरुता सदि त ॥ स्रजे ॥ समाधिमगमसच्च कथेकाग्रमनरुदा ॥ तत्त्वज्ञान
विष्णु ह्य उक्षु व ॥ यनमार्थन ॥ नमरा नमरात्मानं यागिन ॥ यय्या सन ॥ लिंगमवयनरुता

ममवयनक्रय॥ लिंगमवयनाधर्मो लिंगमवयनागमि॥ नत्मा लिंगमवयनमत्रयञ्च किञ्चिन्नवि
 एववुवन्तादिगदासुनासुया॥ सलाकयालाजमि लिख्यसाकी विष्णु यनमवयनमातवर्कः
 र्म॥ नत्मावयना॥ गदिगदिमहादव कपाला यनमवयन॥ कानायथावयसध्वं गथाह्वं ग
 सि॥ रुदवदवोऽयनमात्रविन्द सचानवधमदिमाननक्रयं तदाप्रितयत्यनमानकं यथा
 तदवयनप्रसीद॥ लिंगमवयनमध्वं रुगवानरु गहावन॥ सध्वं ४ स नगा ॥ ४ साकी वरा
 यति॥ ॥ धीविष्णु नृवाच॥ नक्र नक्र महाकाल प्रियनाककननम॥ विष्णु ना ॥ ४ रुतः
 गत्रयीमरुद्वन॥ आ इव व सदा वाधयति वतान् नृनात्ता रुमनाक्रसुनासध्वं सध्वं
 नृत्वता मन्वतपि सान नृनित्यनित्यता कृता नृवलाकयतात्मान मात्मना विवधा दय
 यः ४ कितधा लिख्य किम आनकममा ॥ ५ कवनवद्वन किञ्चिन्नवयुया कन ॥ यस्मादिमि
 कृतकर्म ४ कन ॥ कीनादमथनं गुरुतत्त्वकथपुष्ट मयुः कृयनिना कृयमवसायदमा

[illegible]

विष्णु, अथ सर्वप्रजापतिना ॥ लाकारुमीकृतं यत्, तस्माद्येनापिलकिता ॥ तस्याञ्चनविधिः क
सप्तसप्तमस्तनः ॥ कस्मान्नुविधुर्गन्तव्यं यद्विनाशधियः ॥ कार्यसिद्धिर्नतयाव, रुवदुद
था ॥ एतन्मरुतस्यवचा, निधन्य, सुनासनास्ति ननवापनस्य ॥ दृष्टाविश्वनीयनमार्थमापि, य
नर्ह्यतदागित्रीर्णः ॥ ॥ गिरीस्त्रयना, एकदालख, पुनिवशा, दुदशभा, रध्याय
लीमरुत्तवचवाच ॥ पुनियकं यदुर्ध्वं व, दृष्टनीयागधधियः ॥ लात्यानावस्यकं कम्म
ञ्चनक्रिया ॥ पुयलेनेवनेवद्या, नान्वमास्याञ्चनानिदिशि ॥ अथमादीपककैर्वा, गल्लस्य
विः ॥ अथमावदवाज्ञानाग, ललस्ययथामम ॥ वदवांसैर्कथिस्मारुम, सत्वनशाविता ॥ गुतार
न्यव, आनानिवदवा, रुवत ॥ पंचवक्त्रागस्तधुर्ददगवाकू, मिलावन ॥ कास्यास्त्रुटिकसुका
कल्लगज्ञानन ॥ तस्यमुखानिर्पंचवक्त्रा, नियथागतथा, मध्यमचमुख, लोभनं व, उदं नं प्रिला
दुर्दं वमनास्त्रं व, धूपकं भादका, चितं ॥ तथान्यत्पीठवत्, च, उर्कं नीलं सुलकृती, पि

तथाष्टुर्ग। एषां स्मृत्तुस्ताननी॥ तथा दण्डाः पुत्राः एव जायन्ते निष्ठाः एव नृणां पार्श्वे प्रव
 द्मश्च३ त्रिकूटं दिक्षु भवत्वा॥ नृक्रमात्ताला मलश्च३ मंगलं वनदम्भथा॥ पूर्वे वमादके य
 तिस्रश्च विचित्रकथन॥ लब्धादलं विष्णुलोकं निवीतं भस्वला न्विती॥ आगम एव न चापदि
 लखांकः। एषां न॥ ध्यानश्च सात्त्विकं रूयं नाशं संवदनामिव३। शुद्धवामिका नाशां
 नमस्तोत्रिका॥ चतुर्भुजं त्रिनयनं एकदन्तं मृदादनीपाणाद्गन्धनन्दके प्लुता मादकना
 लश्च३ तामसं ध्यानं उक्तं। विधमश्च३॥ तन्मन्त्रं शापुकरुथा रवदि३। एषां भवत्वा॥ एकविंशतिद्वी
 ना। एषां प्रथमं प्रथमं। सर्वनामस्मिन् केवदायं तं गलनायक॥ तथैव नामस्मिन् केवदायं। एकविंशति
 दणानामान्यं वक्त्रं। यज्ञनायकं प्रथमं प्रथमं। गलनायकं प्रथमं। उमायूगायनायकं। त्रिन
 तिस्रं त्रिं। सर्वसिद्धिप्रदायक॥ एकदन्तं रुवकुतिं। तथा मुखकवाहना। क्राना नयुनवदुस्यं। पृ
 थप्रयत्नग३। उवमृक्ता मृता नमश्च३ यन्निश्चकवसादनं। विष्णुं शुद्धागयं सद्यो। उक्ता एव स

[illegible]

॥ अदि दृष्टी सा, विष्णु नंग मरुद रुका ॥ श्री नात्र मथ नंग नु दृष्टा व द्या मृदा नित ॥ श्री नात्र न
 चन्द व दृष्टा सा यत्तु का रुव न ॥ प्रवी न ॥ अरु य सी त्या ॥ अष्टव नां सा विजा रुम ॥ च द्या मृ
 रु ॥ ८ सा, दृष्टा नात्र व स नि ॥ १० ॥ दृष्टा रुका नित्व निता दिव द्या, नीला जिता दव न ॥ ल रुका नी
 दिगु धा अ मृ मृ लो न न के, मृद ग र्ग र्वे ८ पट रु न न के ॥ नम ग्य क रु स च क मृ ना मृ न द
 ॥ तदा ग र्ग मृ च्छ मा ना व ल व द्य मृ ग त्व न ॥ ग र्ग ॥ ल रुका रुदा दवा, स च्छ र्वा व न म य च ॥ १२
 रुका न ग ना ८ स च्छ, रुव ना मृ रु मा ग रु ८ व द्य गु न ८ स मा ला क, वृध ॥ अ व स मा ग रु ८ लो
 धि ग थ ८ गु ८ लो नि न ग न का म रु न ॥ त स्मा च्छ रु व ल ॥ अ रु, रुव ना का य्य सिद्ध य ॥ १४ ॥ ग म त म
 का ना म, मृ रु को वि रु य प्र द ॥ १५ ॥ प्र व मा ८ सि ना द वा, ग र्ग ॥ ल व स रु त्व न ॥ म म न्क न च्छ रु नि
 ग रु मा ना म रु व ला ॥ दि गु र्ग व ल मा प ना, म रु त्मा ना द रु व ना ८ ॥ म रु ८ मि न मा ल रु, ग
 र्ग व य न ८ य न ॥ नि र्म थ मा रु द ॥ १६ ॥ रु मा ना ८ स च्छ न ८ नि र्ग ना स न र्ग सा रु, द वा ना द

सिद्धये। प्रजापतिवत्सा। उरुताय स ह य सा। तत्र। सा य निष्ठुर्द्धनी। ननको८। ननको रु द
 माधन समाया नि। दक्षा स च सुना सुना। प्रवर्ध स म रु ता ववर्ध न मि ति प्र ता८। तदा रु
 नका नि। अद्वैद्या न्य न क८। नानी ता क्री न म अ च् स व ता। ग। न न पि। ता सु नी ला
 क्क। क पि ला। य क पि ऊ ना८। वरु व अ म का न का। उ म्बु व। अ पि ग ला८। अ रि म्बु कान द
 ८। सु न रि८। पु र द अ न। ज सु ना सु न सु वी ना८। काम धन य या वि न। म म या रु म्बु सं यु क्ता वे दे
 सा ता। र व दि न वे वि प्र सा ना ना। उ त्प उ व य। सु न रि८। स हि ता ग वा। दा न या ना गु र्म ग ज८। न य
 उ सु ना सु ना। य द द अ ता ग। नि व ता। ज ल य। स्त्री क ता स्ता म पि रि८। प्र म ग ले। म्बु ता ल
 म्बु सु ता वि ता ल रि८। य अ रु८। स च८। अ पि रि८। का नि न रु रु दा स ने८। क ल्य क म८। या नि
 त स का न क रु दा॥ य म्बु ता न्द्र द अ मा ना। ग म्बु च न ग ना य मा ना॥ म म न्द्र नृ य त्व नि ता। य
 ना ल्क व सु ना८। नि म्बु अ मा ना द द। ध न रु व त्तर य व च्च स। न ता ना म्बु म न ल्क। को मु रु ता

गो

यस्य। स्वकीयस्य प्रकाशान्तरास्य च कर्तृगुरुयः। विनामलिघ्नस्य च कोटुरुते ददति न। स
दृष्टवे कोटुरुते विष्णवे तदा॥ विनामलिघ्नस्य च कर्तृगुरुयः मध्यध्वजतदा सूत्रा ४। ममन्तु यूनः कर्तृ
तास्तु वलात्कटा॥ मध्यमानास्तु तस्मात् दृष्टेष्टवसमस्तु तै॥ वरुवनवनत्तानां यूनः कर्तृगुरुयः
ध्वजगुरुनर्तनं कर्तुं मध्यमसमन्वितैः। गजानां पाशुनानां च बहुदेकसमन्वितैः। गजानां
तः कर्तृगुरुयः यूनः वममन्वितैः। निर्मथमाना इदं ध्वजनिर्गता निवर्तन्यपि। मदिना विमलस्य
सुनगुरुना। लकीवमन्तदकना ध्वजः प्रयुक्तः। कृषिता न्ये कस्य यूनः गीजनदन्तः
नभ्यन्तः कुरुमस्तु स नद्या ममन्तु नञ्चमस्तु तस्मात् स तः। निर्मथमाना इदं ध्वजः कर्तृगुरुयः
कर्तृवने कनाथा। लकीवमन्तदकना ध्वजः प्रयुक्तः। कृषिता न्ये कस्य यूनः गीजनदन्तः
तः स मथः कविः। त्रिजगत्तमाया मयैषा॥ यवैः कर्तृगुरुयः गिनक विदा इत्युक्तं नाना मयि
युक्ता। वदन्ति सर्वे नैक सिद्धान्तयुक्ता यथा गमायाः कान्तगुणादिना यः दृष्टुं कौमल्यं

मायाकीर्णनकोऽसूना॥१॥ गेनाथयवतीलिग्धा, यमकिंजल्करुदधतां। सस्मितासुदिगास्यामा नम
वनरुमधतां। विविगवक्रारुनतां, नलानकायनपुतां। विम्वारुसुनतीगनीं, सुयोवावा नून व
॥ सुमध्वानुर्ज्यालावृरुत्कटिकानुथा॥ नानानलपदीयेथनीलाजितमस्वावृजा। वा नू
नवदना, हाननूयून। गिरिगा। मृद्वनिधियमानन, कुरुषापिविनाजिगा। चामनेची कुरु
वर्गगमकस्तानलातिने॥ पाधुनंगजमापुर्ता, सुयमानां मरुषिरि॥ सुनदुमयुष्यमा
वगीमलिर्संयुगी॥ कला। यधीयमानाकां दक्षादेवाऽसुसुत्तका॥ नालाकनयनायाव
दद। गक्रसोसगी। दवान्यदानवा। अथ सिद्धवानपनगाना। यथा माता सुयुगाथ, म
नथसगी। नूवलाकितासुदादवा, नयुलका। प्रियाविगा॥ संजातासुत्तकादव, नादक
किता॥ देयासुनिष्ठिकाशाना, यानिनायनलाकिता॥ निनीक्रमस्तवतदासुदुर्दतमालना
थालनासां। विजगमाननवयुधावपन, प्रीवत्तलर्कसदवावला। किर्ता। दक्षातदेव

वनमालयाविता, लक्ष्मीगतादववतालेसविमयकी॥ क॥ ८६८ ससर्ग पूज्यस्य यन
क्ष्मा, मांसांशुयाविनवितां प्रमनेनूयर्त। कामांकमागिततनामहात्मनस्तु, मायाविना
मीक्ष्मनउरो॥ सूत्रा ४ स दह्या मृदमापकुसुदासि द्वापुना किंननचा, नह्या॥ सर्वमाभवेला का
पधनसर्वे ४१ रुधामिदानरुगुल क्षीनानायसागामा॥ लक्ष्मीवृक्षामहाविष्णुक्षीमेव संवृता ४
स्यनपीलाक्षवलाकनगस्यनो॥ गंवाथपठला॥ मेव सुदमानक॥ ८७॥ मृत्वा ४१ रुधामिमेनीववसुहाय सु
वत्॥ वरुवगमयनानाक्ष्मगमयनसुमरुक्रदा॥ गगानिवितगान्यव, यनानि सुखिना निव।
अपुरुदय, विष्म, सत्वात्मना रुनि। ननामयत्सगीतक्षा, गन्धर्वाश्च नानागता ४१ गये
कुम्भनादयागन्धर्वयक्षा ४ सूत्रसिद्ध संद्या ४१ ससर्वमाना ४ यनमात्मचूर्ण, नात्रायत्तचवमग
याध॥ ॥ क्ष्मिणीस्कादमुना॥ एकदायस्व॥ ८८॥ गवामक्ष्मक्षीनाविमथनलक्ष्मीप्रकनराय
नमकाद॥ ८९॥ ध्याय ४॥ ॥ लामगाउवाव॥ प्रसम्ययनमानन्द, नमायूकीजनादनान् नृमृग

मुखे हृदी ध्या ॥ अक्रा पिवि कं यं प्राप्नुयसादा च कं न स्य वा । तदा मरुता च वा वि प्रा । धवला कं
नरुत ॥ अस्वाऽथ पटहाऽथैव मृदंगा मृनजा निव । गथा काऽथैव शय्यैऽथ नदद् नदरु
॥ गमयकाऽथैव गन्धर्वोऽकिं न नाऽथैव मृना गम ॥ ननृ उऊ गुऊ उव ॥ सिद्धवा न
। अथ विजयमापन्नः । अथाऽथैव नरुत ॥ देवदे तासु दादे स्या ॥ यतिनासु मरुतीतला ॥ नम
हात्माना वलिप्रमुखताकमी । गपक्यु पूना विप्रा । हाग्नेवा मानसा कर्त ॥ गान ॥ निश्च्य ॥ य
सुस्माद्युद्धमरुतमरुत ॥ नृव । अथाऽथैव नदत्या । रुगता हाग्नेव प्रणि । कथिर्न वे मरुदुका । म
कथावर्द्ध । निगम्य मन्युना विक्षा । आगता रुगुनन्दन ॥ निश्च्य ॥ यनिवृता रुता । मृता क
नपि । मृगसंजीवया विद्या । यतिनासु मजीवयन् ॥ निद्रा प्राय गता यद्व । इति तासु नन्दार
उक्तिर्न ॥ सवलि ॥ पाह । हाग्नेव क्मि नद्यति ॥ जी विगन किमयव । ममना सिद्धया मर्त ॥ या
नमिद । अत्रैव । यथा काय नृष्य रुता ॥ वलिना क्मिवय ॥ अत्रैव ॥ पुत्राववन मवुवा । तामन

[illegible]

हिंतागुननाद्यवाह॥ नलकमाननगया, क्लान्तस्यविकीर्णं॥ दद्यान्नांकार्यसिद्ध
दानप्रयत्नं॥ नलोपनाहितास्माकं, यन्मात्रंरुलप्रदं॥ ॐ निमत्वा तदाभावा
तयवत्तम॥ विष्णुदत्तश्चिन्ताश्च, तत्कृत्वा दत्तवद्वयं॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायत
ल॥ तन्नाच्येवसूनायानं कनविंकारुवन्मखा॥ मन्त्राहितस्यजातानि, तिरिक्ताविश्व
॥ १८॥ वदन्ताविश्वपूय॥ कृत्वा मन्दरागिणा॥ वृक्षरुखातदा, रुगा, इदंर्षावरुयावहा॥
इमंस्वाइहा, वलुचरुलयाविना॥ वृक्षरुखासूनायानं, कथयुर्वेगतागम॥ ॐ ह्यम
यवतामिदमवचनि॥ ८॥ नि॥ नामवाहनता॥ दिक्क, योगसुद्विषयामति॥ त्रिभिनाधुप्रवत्त
लार्कप्रभुमूयायथो॥ तन्नाच्येवसूनायानं कनविंकारुवन्मखा॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायत
ल॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायतल॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायतल॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायतल॥
नितावत्सहसा, ॐ ह्यमयानि मन्त्राणां॥ १९॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायतल॥ यन्मात्रंभात्यामयानं, नृजायतल॥

ॐ वमोत्तमवर्ग्ययनो वसन्तस्य दृष्टं तथैव वसन्तद्वयं । न नाकं न गदाकातं नाकपृष्ठं न
यावदं ॥ तथा विना न्विना दवा जमयापि गयस्विनः ॥ तैलाव्यं वायदायमं वरुवचनना दिज
॥ प्रकादिवत्तु रायगु नाक्षवसनिदृक् नः ॥ न कालमनर्तगण साधूनामपि जायते ॥ नाजाया
युगायस्मिन् नाक्षवसनिनगवे ॥ दृष्टिं नैव वसन्तं गथे वायद्ववादिजा ॥ रुविश्रवत्तु वा
॥ प्रजापतिनामोक्तं तव ॥ तस्माद्वाजा सुकन्द्या धर्मः ॥ द्वायनं हि ॥ तथा यद्व तथा नाकः ॥
न प्रतिष्ठिता ॥ ॐ त्वं च कर्तार्यं ननपायनवेदिजा ॥ यीतिनवद्वहिस्त्राये ॥ सायद्व
रुगता ॥ ॥ नो न क उवाच ॥ नृश्वभधनं नैव प्रार्थनार्थं मदुक्तं ॥ दवानां विद्युत्
स्मादिश्रं प्रजायते । न कस्यचमहात्मानं यथावत्कथयस्व नः ॥ ॥ सुग उवाच ॥ यद्व
वानां च मनूष्यानां विना भगः ॥ कर्म्मवत्तु खदृष्टवानां रुद्रुर्गर्गस्य ॥ ॐ त्वं च क
न्यः दुर्गस्य रुग्मिर्गः । गुणा नवद्ववादिजा विन्व नृपवधस्तथा ॥ ॥ नो न मस्य गुणाः पत्नः ॥

स्य गुरु ली। प्रायमरुद्ध सवित्रं, यस्य नास्ति प्रतिक्रिया। अदिद ४ कृतक म्मा। एत न कृच्च को र
ति। सा कलो कनम दता, यत्मा सा। हिरवनिग। द ४ कृता पाजितस्या थप्रायश्चित्तं तु न कृत्वा तु।
विधिवदिष्टा ४ सर्वपाप पणनया। उयमा न कमस्य संसहाया न कर्ता विरुत्तु॥ तप ४ सुधर्म निष्ठ
वैकि सदानना ४। पापवत्सु र्मला कं, ना उकाया विवान सा॥ तस्मा दसौ दूतावान ४ प्राप्ता वे कर्म स
॥ संप्रक्षम्य न दासवैला कया लाहू ना विन ४। वृद्धस्य निमृष्टा गम्य सर्वमात्मय विहिता ॥ कथयामा
मृष्टं सुसुवर्गु नृपति ॥ ददन्त क्व वचा विद्या निगम्य वृद्धस्य नि ४। नृना ऊ क न दाप न्य विनया मास वे
ना किं कार्यं वाय कर्तव्यं, कथं प्रयास विनयति ॥ ददना अश्रुता काना मधी सा विना सता ॥ म न से व
न सर्व, कार्या कार्या विचार्य वा शम म ग क्व च निता दवे ४ सदम हा य म ४। प्राफा गला प्रयत्नं य यज्ञा श्रु
यून न्द न ४। य स्य ती न स्ति ता रु ह्या, च दुम सी व रु या व द्वा ॥ तदा प विस्मा सु सच, दवा म मि ग सा चि ता ४। न
कान श्र कृ ग न स्य, ए क स्य गु न्द स ग्रय ॥ समुक्ति ग रु त ४ न का, ददन्त च उ न्द न्द ॥ वा म्य मू नि त व द्

हि वृक्षस्य तिमिरा मता प्रलियत्यवत गत्वा कृष्ण सर्व सगत्तुथा गदादी न मुखारुत्वा मनसा विभु
वान् न स्वमध कर्त सत्त्वं मल्लान्त कर्त मिरुता जधने वमया कार्यो किं कर्तुं वद प्रशास्य दस्या वव रुगवा
वृक्षस्य निरुदानधी ४॥ यत्ना त्वया कर्त यच्च तस्य दं कर्म स ४॥ इदं ता ॥ वासि मदि स्थिता ॥ दुर्ग श्राम ॥ दुर्ग दव स
य ॥ प्रयत्निरु हि रुत्या या न दृष्ट मितिका निरि ४॥ नृकान ता हिय क्तान या पं तस्य प्रतिक्रिया कथि
धम्म ॥ मरु ॥ सका मस्य न विद्यते ॥ सका मन क्तान या पं सका मन वजा ते ये ॥ तासां विषय रुधन पा य
निरु विधीयते ॥ यस्या त्वया कर्त यच्च स्वय भव रुता दि ४॥ यत्ना हि ता दि विद्वांस रुस्मान्ना सि
क्रिया ॥ जाव मन ल मस्यति ता वद मरु नि नार व ॥ गता न्वमध सं ४॥ यत्त तं तस्य दूर्मेता तन्न दं तत्त
व या निता दि दि जा यथा ॥ सचि दे वघट ता र्थ नति ४॥ जियथा ध्वपि ॥ तथे वरु क्तान या पं दी यते व
कर्त ॥ तस्माच्च देव सं या गत आर्य स्वता दि कं ४॥ यथा कं त रु वरु ॥ धम्मि ४॥ नान सं गय ४॥ जम
ता चि ४॥ वरु ॥ क दव धि रि ४॥ सदा ॥ लोकानां कार्य सि द्धर्थ दवाना अ वृक्षस्य ने ॥ ४॥ दुर्ग न सदा रा गय

इति

सि नाचन ॥ यथा मृगस्तथा दंष्ट्रं वृक्षस्तथा मृगस्तथा नागश्च मृगस्तथा नाचन ॥
मृगस्तथा नाचन ॥ त्वनाचितीयूर्यं दवनाजानमास्तुवा कृचं नु मदनरुता ॥ सत्यप्रतिव
॥ उवमृकास्तदासर्वं वृहस्यति प्रनागमा ॥ येषामनावर्ती रूतु पूनन्दनविचक्षिती ॥ कथयामा
नचिपिगियथार्थानास्तदेता ॥ न्यर्किं कार्यविमृश्यन् ॥ ४ पून ॥ पून ॥ ५ वविमृश्यमानानां ॥
५ नानद ॥ यदृक् यागस्तु ५ दवमि ॥ मृमहातया ॥ उवाचयूजितादवा कस्माद्यूर्य
॥ ननाका कथयामासु ॥ सर्वं गजस्तवक्षितं ॥ ॥ नानद उवाच ॥ ५ तमस्मि मया श्रुत्वा
कं गजवदिती गतमिन्द्रस्तवक्षितं मनसायनभटादि ॥ यूर्यं वा न्यतयसा मरुता विक्रम
दि ॥ नस्मादिन्द्रादिकरुच्यो नदूय ॥ सा सर्वं गजा ॥ क्षास्मिजाश्च प्रणिष्ठाप्यस्वनिगनेवनिर्गुना ॥
कानमन्वमेधनां गतं गनमदात्मना ॥ नानदस्यवच ॥ ५ पूत्वा सर्वदवान्मादयन् ॥ नदूय नाश्च मात्रादू म
पयनगता ॥ ज्ञानी वादिनदनाज्ञानदूयाश्च मनावर्ती ॥ नाश्च दहं मरुदस्यसूने ॥ सर्वं मरुमिह ॥ ५

॥ नदागत्यादयः सर्वे नद्वर्गयथ्यपासनागध्वर्वाय नसायका विद्याधनमहा नगा॥ यका ४२
॥ यटगा यवान्यस्वर्गवासिनः ॥ नदा मदात्तवाजागा द्ववयूया निनक्तन। र्गिद्वरुय्य मृदंग
नदद्वन्द्वयः समा ॥ गायका यकुरु सुपतथावायानिवायका ॥ नरु काननरु सुद्व तथा नास्रम
सवा ॥ जलिपिका सुदात यवृरुस्यनियतागमे ॥ जलिने वदसूक थयथावलस्ययजनी कृतवालेवगमि
दिवा विनामरि ॥ तथेवसर्वे ४ यनियू जिनामहाननागास्तान्निद्वषक्त दानी ॥ न्द्रासनलन्दसमान
यमान ४ यनमलवर्षसा ॥ स्रगधदीपे स्रवाससाविनालका नरा ॥ न्द्रा विनाजिनाम। वरुतदानी नद्व
४ स्ररुयमाना हितथा स्रनन्द ॥ न्द्रा तियनमकलाकलान्विनामो स्रनगा। व ४ यू
दानी। नद्वषनृयवना वरुवरुदानी सयदिमरुगास्रद्वचक्षसथननय ॥
वाच ॥ न्द्रा स्रथसयव नायातिममसनिधो ॥ गा ॥ न्द्रा वाकयनगीद्व माविर्त्ति

४ नद्रुमस्य वचः ४ त्वावृहस्यति नूदानधी ॥ गच्छीरुवनमागम्य कृवावचसुविस्तरः ॥ गच्छ
 मिर्लेन कानीना नद्रुमगुर्वे ॥ नाकाधरागिनीत्वं नद्रुमस्य नगतावृहः ॥ सचीप्रहस्यः
 वृक्षमप्रातिमं कलार्थं ॥ ज्ञानपनिपुः ॥ मुहियः ४ गच्छासुनस्तिगः ॥ नुका नमः धमधाना ॥ गच्छ
 ननवे ॥ तस्मान्नयाग्यं प्रपुमां तत्त्वतादि विमृश्यतां ॥ यदि मांसादि ताभादि यत्र प्रियम
 न ॥ नृवाकवाहननेव कृशागत्वममातर्य ॥ तथानिमत्वा तां निगा वृहस्यति नूवाच तां
 र्थका मसंगतं ॥ गच्छा कं वयथा गच्छ ॥ तथानिमत्वा नाकासो नद्रुमः ४ काममादि तः ॥ विमृश्य
 यावृक्षा नृवाककिंप्रसन्नता ॥ स्ववृक्षावचिर्न स्मृत्वा वाक्कस्य तपस्विनः ॥ नृवाकाप्यः
 तस्मादात्मानं वादयाम्यहं ॥ दास्यामि तस्या प्राप्स्यथ ॥ नृमिदं दिवर्कं ॥ निविकाश्च दक्षीता ॥ य
 दि मांसां काममादि तः ॥ सार्थं तिष्ठतना ॥ त्यागिता वाक्क ॥ तनदि ॥ गच्छेवाग्गनाह ता विप्रस
 यादू नय्यात् ॥ उक्रमयमदं प्राप्य तिर्थाग्या निगता वृहः ॥ यथादिनद्रुमा नाका तथामव

२ स्तुति

नयस्य निहुराहुरा घननिननकथान सुवावे नावसंहाय ॥ ॥ यथातिनृ
४ कृगमूदिनैघूर्य नषाविद्यप्रजायत। नृत्पकत्वेनदवर्धे विदिसर्वपनसस ॥ म
निदरुानि नूनदानयुगानि च। गमदानानिवदुन्यव रुमिदानयुगानि च ॥ तथेवसच्च
रुमा निदातानि वाक्ता निमहीमिहिसूदा ॥ नृगानिसुचानिमया नदव कालचकाल
विधानन ॥ यरु निरुवागुयुयानि नरुका निरुमैवागुयुयादिरु ॥ दवदवागुगन
क्षायरु नरुका ॥ गमैवालेयुनादरु कन्या ननचमाधवी ॥ पलित्वनचरुयस्य दरु
नामदा ॥ गमलवनगुनानाथ विष्वा मिगुस्यधीमता ॥ नृवरु नान्यनकानि सूकृगानिम
॥ मरु निववदुन्यव नानिवकु नपाय्यत ॥ रुय ४ वृक्ष ४ सच्चदवे ४ सनाजाकन सच्चगु कभ
थधी ॥ विरुानुमिक्कामियथार्थतापि सच्चवयंरु रुकामायया न ॥ वचानिगम्यदवानी
निनमितयुगि ॥ कथयामासगन्सर्व घूर्य ॥ ॥ वयथार्थन ॥ कथितं सच्चभनच नि ॥ ॥ ॥ ॥

रुदा॥ स्वयं कथयनेन यथातिशयतदुवि॥ तद्वत्तु देवसर्वप्रसन्नानि तु यम्यतां भावमवयुनामा ता
नकमतन्निता नून्या न्यदृश्य तलाका यादिकाया हितरुवे॥ नक्राननरिषकाथं प्रयता
दिशारुमा॥ सर्वसूनाय जयथाधमकारुविद्धा गन्धर्वयक्रवगवाय किननाय विद्य
मयसगिहमय विनायना ४ समरुवमनूना सुथेव॥ ॥००॥ निग्रीकन्दयूना
स्वयं वक्रमय यवमो धमय ॥ १७ ॥ ताममगुवाच॥ ततः ४ वीतान्प्रवाच वाच्योव
माचिर्नाकचर्ता सर्व वरुय निगूनागमा गन्धर्वसादिना ४ सर्वगकदुर्द्विचवदना ॥ ४॥ वक्रमरुया
यगामसुनसकमा ॥ वक्र नाकिन एव विन्व नूयानि मन्दधी ॥ ॥ ॥ रुतकृमो मरुद्वेन स
पिनिनाकगि ॥ तस्मात्सर्वरुवद्विगन्धर्वयगुसप्रभु ॥ नूवक्रादिदना पूर्व मरुद्वेन
॥ नूवक्रामागुलवन स्वया सफ ४ पूनन्दनी ॥ तथेवसापित ॥ ॥ ॥ मया साद्वममा निन
कादि किमस्मान् स्वमवसानपत्रा रुवना यथा मदर्थमानीतो ॥ ॥ ॥ क्रीजीवतिता वरु

निरावक्तुं साध्यां नवविध्यानि॥ कापि सा साग्यलौहलाको नवकृत्तुनि
ननामानं नानाममनसं नय॥ गच्छन्तीत्यं सुनेसाद्धं नक्रमानयमाचिनं॥ यथा
नीचे पुनः ४॥ यददामितं॥ न्याकवचनं कृत्वा सुने ४ साद्धं नक्रमानयमाचिनं॥ यथा
रुत्याः रुधोऽतिनी॥ सनसस्तीनमासाय नक्रदवाः रिवाऽथेन॥ दृष्ट्वा नक्रदवाः नसर्वं नक्र
नवे॥ उवाच दवदवः ४ कस्माच्चूयं समागतं॥ नृदं द्रिपातकग्रस्तं वक्तुं रुत्यापनिद्र
मिष्टामिष्टादवा उवाची नयसाविनं॥ नक्रत्वावचनं नस्य सर्वदवा ४ नक्राना ४ उच्य
उर्वदवनाज्ञानमदुर्गं॥ उवाच नवाच्यं नयस्वामूपकाननं॥ कर्तृत्वयेवयत्कामं
वधदिकी॥ विष्टकामं सुननेव कर्तृत्वा नक्रकलकटी॥ ननदवा ४ कर्तृत्वा नक्र
नक्राद्धनरुयादव यनस्वामूपकाननं॥ नन ४ सर्ववयं यागा स्त्री ननु मम नावर्गिः उर्ववि
नमू दवमूव नदाववी न॥ वक्तुं रुत्याव नायका दवन्दवनयाम्यहं॥ नदावृष्ट्यतिवा

[illegible]

समागताः॥ वर्यं सर्वं तथा रूपा, स्थापसा नीरु लघुदा॥ तदा रुखा विता ४ सर्वं, रु
न॥ यापि नापि महाराग, सुस्मात्सर्वं विमृश्यात्॥ तदा धनाधसा वाका ४ सर्वं वृका सम
ता कृत्वेता सर्वं, प्रसादाच्च न कृता ४ कृदिताः॥ यव सर्वं व, अनका निख मागता ४॥ तना
नित्यं, गूर्यं सर्वं रु विष्या॥ था॥ लूकाः॥ तदा सर्वं रुद्रा न रुखा विरागता ४॥ तना का
उच्च ४ सर्वं दिवो कस ४ नृदि विगृह्यता मय, रुखा ४ कार्य सिद्धय॥ तदा का था मिलित्व
सर्वाः धनाधसा॥ कानिका निवया धानि, तथा दूय निगानि च॥ नृस्मत्सं पुर्क संवन्ध, न
मनादि रि ४॥ धून नि प्रालिन ४ सर्वं, याप न य निव द्वि मा ४ ता सा वचन मा कल्य, वृहस्प
वरु॥ मारुयं कृत्वा ता सर्वं, एन सा दूस्म न न हि॥ नृप ४ धून नि सर्वं धा, वना वन निना सिनी
क्रिय ४ समा दूय, वृहस्प नि नृवा चरु॥ नृय वग्रा था रुखा ४ सर्वं कार्यार्थ सिद्धय ४॥ नि
दुना चोक्ता, मूय ४ सर्वाः न्य था मिता ४ धर्मा र्थ कार्य सिद्ध र्थ, ज्ञाता ४ सर्वा दि था मिता ४ या

नतथाथा ननपाथननान्यथा ॥ लिख्यन्तवदवयका ४ ॥ निवद्या नू ॥ सन ॥ गमसि नम ॥
क्षप्रभाक्षविमृष्यगा ॥ या मिहि ४ प्राच्यामाभापि उवाचाथवृहस्पति ४ ॥ मारुत्यकूवेतासि
यायादस्मान्मूलावता ४ ॥ रुविष्यात्तगथा न्यासा नारुविष्यरु लप्रदा ४ ॥ रुर्त्यासाहिवसत
नथाकामित्वभवव ४ ॥ एवर्मगन्थरुत्याया ४ कल्पिता ४ कुन ४ सुने ४ ॥ निवासमकभात
नष्टुदिगारुमा ४ ॥ निष्याथा हितदाजाना मरुडाक्र रिमिश्चि ४ ग ४ ॥ दवयूया सुज ४
वजमिहि ४ सरु ॥ गन्थासमनो हितदायूनन्दनावरुवविन्वाधियनिमलात्मा ॥ दद
दिमरानरुवावे म्मुनिव्यवे ४ सिद्धग ॥ लोसुदानी ॥ गदाग्नय ४ ॥ गरुमाना वायव ४ ॥
प्ररागा निशुका ४ ॥ गानासय ४ ॥ पृथिवी ॥ गरुमाना सागथा दथा मतिप्ररावा वरु
गदाका सान्मनासिवमनस्विना ॥ नयग्या मृगवादिन्या वृका ग्या सन्मदा रुला ४ ॥
अधथा वरुवृग्या मृतापमा ॥ एकपयनसर्वासा ॥ ॐ बुलाकनिवासिनी ॥ वरुवय

लक्ष्मणमवदीक्षुः शिवं रघुसुव्रत ॥ तदा वने वरं दृष्ट्वा स्वर्गलोकं मया वरं ॥ ४४ ॥ त्रैलोक्यं तदा देवैः

मादकं न सुखा ॥ ॥ लामण उवाच ॥ एतस्मिन् न न खडा, दृष्ट्वा चेत्तु मया सर्वं ।
नीयं, पूज्यं ॥ ४५ ॥ कनयीति तं ॥ अगममनिर्धेदयं न, तय सुखं सदा नृणां । तय सा न
कला कपिता मरु ॥ ४६ ॥ शीघ्रं खनयथा दवा, मृदा ॥ अथ विधिं सति ॥ तथ गिरि व
सायनं मदिना ॥ वनं धाम सयं व, वरु वयनं न सुखा ॥ वरुना मां किं न सुखं देखा
न ॥ ४७ ॥ धनूषा न न माता, हि, प्रसूतं वच, धमन ॥ पाताला निर्गता देखा ॥ पूर्ववाः
यगिता सुन संधी ॥ रुगुना की विना खनन ॥ वलि विना पित सच, वरु मया ययुः
मन सुखा वरु ॥ पाताला दाग तं खनन ॥ सर्व मदी तं न पार्थ, न न कन मया खना ॥ तदा
मथा, वधू माना सुय, खिन ॥ वक्रा दी खनिना ॥ सर्व उच्यते स न मरु मां । तथा च द्या दया दव
वी ॥ सम नृणां ॥ वक्रा धाम कपिती सर्व, खड्ग, अथ विधा विनी । रुत वधू धर्म निग, रुत
मन दि ॥ वक्रा नाम मया न मा ॥ सर्व देखा धिधा रुते न ॥ ॥ दवा उच्य ॥ तथा प्रसूत ॥ क्रियं

॥ श्रीगुरुवन्दनः ॥ निवयवक्तुं वाच्यं धूमः नृचः सवासवा ॥ यदा ह्यन्धादिह स्यात् विमूढ
नादिवि ॥ तस्मादेतन्निवकाय्यं च कृतमस्मिन् नृनामदा ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
कृतवृद्धिः ॥ अथैव नृनामभवत्तु किंकार्यं नृनामदा ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
प्रसत्तना ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
दाववीर्य ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
चव ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
नवगदावक्तुं यापिष्ठा र्ककृतं ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
यनमयावायुपिष्ठा निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका
कृतानिष्ठा निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका ॥ अत्रात्यन्तानि निवका

त्यष्टरि

कृत्वा तदा ॥ सि प्रसाधुतया गच्छुः सुधावेमूढुमा लया ॥ पुष्टु रुधमहादवा दवाना मरुय पुद
वन्धनं ॥ ग सि प्रसा मरुत्मा, धवाधिदव द्विष्टना नका दना गमा मना य न निघाति तो मरु ॥
वका येन कृतं यच्चुर्न ॥ गमा धुता य न निघाति मध्य, वन्दं वचु उ कृतवा न्दया वरु ॥
नात्मानि तथा गमा य, तथेव ना नाधु न य य गमा धु, कृत्य निना नाम न रुद रुद, मरी मा धु
वरु व निमूका ॥ ना ना गमा य य म न प्र रुद निी वृ य मा ना गमा द क व न्दु ॥ निर्वदि
नमात्मदेव, य ना पि निर्यय नमात्मदेव ॥ विहाय न न्दु रु न ॥ प्र मरु ॥ निर्वन ग
य नात्मत्रय ॥ य नैव सर्व विधु न व य न, य ना धि न य न क न स मय ॥ य स्या ग रू न दि रु
य न, लिङ्गा कि न य च रु ग कि न थ ॥ दृष्टं न दृष्टं य न म प न था, न म न्द रा ग्या नि य न य
य ना धु गो न दृष्ट ॥ क दा विधु दा न व या य न मात्म नि व ॥ ना धा वा पि द विधा वा, उ रु ना य
पि वा नि व रु कि न ना नि र्य, नि व प्र व न र्ग स य ॥ या वे य न क र्ता पू र्ण, नि व स्या य नि (य

लकार्यैः पूर्व ज्ञेयैव दत्तपूर्वैर्दृष्टपदैः ॥ भादक न सदा विप्रसक्तः समर्पः शिवलये ॥ शनिनायि हि जायते दीपका नरुत्तन हि ॥ तिल

॥ दृष्ट्वा सन्नायमाया नि, दायी प्राप्ता नितत्समं ॥ यदीयमा ली कृच्च नि, कारि कारि ध्वं य
वत्कालं पुनः कलनी दीपा श्रुतिंगम प्रसक्तः ॥ गावश्च गमसु प्राप्ति, दाना स्व। ग्नं मदीय न। को
दीप संयुक्ता, दीपा दका शिवलये। दाना प्रसक्त पि कला। ॥ शिव न सदा भाद न ॥ नून मदी
युक्ता, दीपा दका शिवलये। नया नि यत्र मस्मान्, कलल क समन्वित। कथू ना गुत्र
यथ ये नि सदा शिव। नून वरि का स कथू ना, कृच्च नि शिव मूर्त न। एक कालं द्वि का र
कालं यथा नृदि ता ॥ तिगा ज्ञेन प्रकृच्च नि, न नृडा ना व स ग य ॥ नृडा कृधा न र्मा य
शिव मूर्त न। दान न य सिती। यत्र पञ्च काले क नृदि त ॥ न र्मा य स क न स र्व, क न र्म
ध्रुव। नृडा का य शिव ना का, कां नृद्वं द्वि का क मा ॥ नून र्मा क मूर्ख गाव, या व द
धा ॥ ॥ न र्मा कौ व विख्याता, ॥ शिव धा न यि नृ न र्मा ॥ नृडा का ना पश्च मूर्ख, कृष्ण देव
ख ॥ स्मृ त ॥ यथा न य नृ क मूर्ख नृडा क नित्य भव हि ॥ जीव नृका य विरु या, न ना कृ

संनयः॥ यत्र दार्ढ्यं यश्च मूर्खः धानयन्त्य निर्जनना ॥ तत्र दत्ता कंगच्छन्ति, निवनसह
यस्तस्य क्रियायां ग, धाद्वेदवाचनानादिकी। यत्क्रियते गुरुं कर्म श्रुतेर्वाक्यं धानयन्तः। पुनः ४५
दापि, नृदाकाय दिवर्कः। स्वापिर्न निरुद्धं न, नाशकाया विवा नसा। तथा नृदाकर्मवद्वा
क्यमात्रं नृदा॥ एवञ्चास्वागुरुं कर्म, कार्यं नृदाकर्म नसा॥ विष्णु धानयन्तः, विरु
धुतया॥ तत्र दत्ता क नृदाय, रुविष्यन्ति न संनयः। कपितायाः सगृह्य, (समयवान्
। पुष्कं कलाध सगृह्य, विरु ल्यर्थं निवप्रिये। विरु नीति सभाख्याना सर्वपापप्रना निनी।
ट मुष्ट लखाच, कासाख्याव प्रयत्नतः। मध्वभावर्क, यित्ता, रु, नृगुर्कैरे दय नरु। एव प्रित
युक्ता, ललाटयस्य दृश्यतः। स। निव ४ निव विरुथा, दर्शनान्ता यनाशनः। रुटाधनाय्यय।
सम्यपश्च नवाख्यया। तनिवंप्राप्नुवन्तीव, नाशकाया विवा नसा। रुटायेकाय यिष्यन्ति, निव
धनायुता। नृत्य नवावरुत्वन, युजिता वासना निव ४ कूलकाटि समुद्र, निवनसरुमा

तस्मात्तु निवात्य न तन्, नास्ति किंचिद्विजा रुमा ॥ यदेवमुच्यते तन्, तत्सर्वं निवका विना ॥
द्राहिलो कानां कलौ चैवानुभा दत ॥ निवकृत्कात्स कं विध्वं, जानिध्वं दिद्विजा रुमा ॥ निवः ॥
नाम, गाय न मरुता रुया न ॥ तस्माच्चि वं विन यतां स्मर्य गाथ दिजा रुमा ॥ ॥ मय न
॥ सामनाथस्य माहात्म्यं, कागश्च त्वत्प्रसाद न ॥ नाहा ॥ निनारुया त्वचं, नक्रिता ॥ य न पठि न
॥ अद्वादय ॥ अथ, तस्मि यद्द स दान् ॥ ॥ न ग ॥ उद्द स न ॥ स च, किम कृ चं न द द्यता ॥ निव स
मानं हि, ॥ न तं न व मूखा न न ॥ महि मानं निव स्याथ, कथ्यतां य न माथ न ॥ ॥ त्ता म न ॥
यदादि दं लेभ्य यना जिता ॥ स न ॥ न तु व स चं न प्र ली य न ॥ ॥ निव प्र ली न ॥ स द न ॥ स न
दाय स चं य म ना द धू रु या ॥ न ॥ ये व दं त्या कृ द माना रु दानां, उ त्सां रु यू का म हा व ला थ म च ॥
भ ना थ्य य न ॥ य न थ्य, यृ द प्र च क ॥ य न मा रु यू का ॥ ॥ उ वं हि स चं क स न ॥ स न थ्य, ॥ रु द्दि
य निथ्य ॥ य न थ्य ॥ ॥ ॥ ऊ या थि ना म र्थ यू का ॥ य न थ्य नं हि द्या य थ ॥ रु म व ना द न थ्य ॥ ॥ नि द्या

लसनासनासने, लोनामुथागे ४ यत्रमन्त्रिथ ४१ चक्रसकलासर्व, मांस १६१। नवकदमात्र।
 हाडिसंयुक्ता, ससागत्रवनाकसा। सिद्धैकवन्धनिकववानिमहाक्रिय॥ ध्वजात्रथापगाकास्थ
 जिमिनाशिव॥ वरुणस्ययगभ्यामन्, वरुणी नरुयावराशा नूगार्था। गालिताधेय, नवनात्र
 कसा॥ नात्रयन्कीपत्रयान्, रुतप्रमथनाकसान्॥ गीकिनीकाकिनीनोडी, यन्त्रिस्थ ४
 प्रणी। नानाकालिष्ठसंयुक्ता ४ यत्रस्यत्रमदावित ४॥ एवमंकीउमानास्ते, रुतप्रथम
 सा ४। नासतास्मिन्महाप्रोड, दवासूत्रनतागभ॥ बलिनासरुदवन्दा, ययुधरीमविक्रम
 स्कारुद्यानदवन्द, वेनाचनित्रमर्षत ४॥ तांगकिंवश्च यामास मरुदादानविक्रम ४। म
 सेवलिंयला, दवन्दयत्रमर्षत ४॥ वरुणस्ययगभ्यामन्, वारुविष्कदवीश्ववान्। किन्तवारु
 ना, वेनाचनित्रमर्षत ४॥ गतासूत्रयतहृभो, विमानासूत्रमन्त्रिज्ञान्। यन्त्रिचवलिंदक्षा
 यचात्रुषावित ४॥ ववर्षनगधनाहि ४ यथा दग्धवपचर्ग॥ मरुन्दसगर्षवैव, सरुसावनि

ने॥ गयार्थद्वयमरुद्यानं कुमूलसमरुद्येदी॥ नृद्धादिदृष्टयवर्चोद्यभादुनदृष्टमृदिना। वद
 मरुतामजा, निवगजा पवृद्धिग॥ निपात्यवृष्टयवर्चोद्य, मिद्धा॥ यत्रवताद्वन॥ गगावक्रोद्य
 दानवा संवधीद्रुता॥ निपत्यकुदिन॥ कवि, कृत्विस्व नृगा रुगा॥ विद्वताभ्य रुगा कवि
 तादि रुगा॥ प॥ उर्वगद्यानिता॥ कवि, दिद्धा कृषिगनय। गथायमन निरुगा, वायूना
 नव॥ कृत्विस्व रुगा कवि, नेमननतथाप॥ लुग्निना निरुगा॥ कवि, श्री। नेवविद्वानिगा॥
 दाव निरुगा, वलीयशा मरुता सूत्रा विक्रममलिनन्या। सूत्रेभ्यसर्व॥ मरुता कयाते॥ निव
 द्यादि रुगा मरुदानी। गता मरुता देववला मरुतात्मा, सकात्तुनमि॥ यत्रमा रुद्रका॥ यथै गदा
 मरुमाना, रुद्रु सयै कृत्विमति॥ स॥ व॥ सिद्धाष्टादनिगभ्य विमूलन ससंयुग॥ यथा
 नेव सिद्धाष्टादनिगभ्य विमूलन ससंयुग॥ यथा वलीयशा मरुता॥ यावन्नी देव सीना
 वी सिद्धाष्टादनिगा। कालनमि वतं दृष्ट्वा दवा नृद्धाष्टागमा॥ रुयमा जग्मू न कुर्त्त, तद

तेषु सिद्धेषु तमात्तु मरुता देवता मरुता

यत्रारु वत्त॥ किं कर्मो यवयसर्वं कथं भव्या मरुतु न॥ एवदं च दसं स्था कामली कं सिद्धं स
वं विचिन्त्य मानास्तु, कागता सिद्धिं नानद ४ नाना नदनयनसर्वं, युगा च कं मरुतु न॥ कथित
न्दाय, कालनमस्तु यावत्त॥ नृकयत्वं वसंग्राम, वलदानवलनदि। विष्णु विन
का नलमष्टु ल॥ अर्धु वसतर्त विष्णु, स्मर्य कथि नमस्तु न॥ तमातनीलं वनद
क्रिहि ४॥ नानदस्य वव ४ सुखा, तदा दवास्व नाविगा। अन्ननमस्तु नाविष्णु, सुग, ०-१
न॥ स्मनन ४ यनमात्मान, मिदमृयुस्थ न विडु॥ ॥ देवा उव॥ नमस्तु र्गगवत्, न
स्वमंगला, श्रीनिवास नमस्तु र्ग, श्रीपत नमस्तु न॥ नृयास्मा नृयशी नास्व, कालन
दिता न॥ अर्धु मरु सिद्धेया च, दवाना मरुया यव॥ गगनस्तु मरु विष्णु, गन ४ यनिमी।
प्रिया समर्त इदं, याद्व कामं ददनि न॥ तथा दृष्ट्वा कालन मिदु दानां प्रदस्य मानी
वला चिता। कस्त्वमस्तु रागवत्तु य ४ न्यामी यवावानलमरु विक्रम ४ कन गृहीत

तमहा प्ररु, वशीचकत्माञ्च कथयस्व मप्ररा॥

॥ श्रीनगवानुवाच ॥ युद्धाधो

तत्त्वया मरुमहाकुशलाः प्रत्वा विष्णुमहावाक्का कालानि मिः प्रगायवा नः ॥ ५ ॥

त्वा रुगवर्त्ममाक्षकर्म ॥ मूलरुगादिदवानां समन्वयं युद्धे दृष्टं यथा युद्धे कुरुवा

दिष्टु लो। सिर्षमनः ॥ प्ररुम्य रुगवानविष्णुः त्रुवाचदं महाप्ररुः ॥ गगल्लारुवत्वेदि

रुवा न्यदा नृपुणं वविष्मं युद्धे चैव यथा रुवत् ॥ तथा कुरु महावाहा गगल्लारुवा

नाथ निमत्वा हि महा नूरावा दिष्टेऽसमने चैव पर्युक्तं ॥ सिंहापनिष्ठेऽयमरु

चलेऽकुरु नयेच्छुदानीं ॥ गगल्लामथ रुगमहे नन्दमन्दमहात्मा कुरु नमः नमः

द्यामः ॥ त्रिनिखमपयमृग्रगृह्य संकलं वाचं दण्डन विदुः नवक्रुष्य दकामाह नि

ः तिष्टीर्कन्दमृनालकदा नखः ॥ ६ ॥ वनः ॥ युद्धे वा मय युद्धे गुथादः ॥ ७ ॥ अथ ॥

उवाच ॥ तता युद्धमनीवासी दसु नैर्निनासः ॥ ततः सिंहाऽसयः ॥ ८ ॥